ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 10, October 2017

भारतीय विदेश नीति के समक्ष चुनौतियाँ

Dr. Rajkumar Goyal

Associate Professor, Political Science, Babu Shobha Ram Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan, India

सार

भारत की विदेश नीति का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना, साम्राज्यवाद का विरोध करना, रंगभेद नीति के खिलाफ खड़ा होना, अंतरराष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण और राजनीतिक समाधान का प्रचार करना, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देना, गुटनिरपेक्ष और गैर-प्रतिबद्ध रहना है। और तीसरी दुनिया की एकता और एकजुटता बनाए रखने के लिए है।भारत की विदेश नीति के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में राष्ट्रीय हितों का संरक्षण, विश्व शांति की उपलब्धि, निरस्त्रीकरण, अफ्रीकी-एशियाई राष्ट्रों की स्वतंत्रता शामिल है। इन उद्देश्यों को कुछ मार्गदर्शक सिद्धांतों जैसे पंचशील, एनएएम, और अन्य के माध्यम से प्राप्त करने की मांग की जाती है। वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता से लेकर अब तक विश्व व्यापक रूप से बदल चुका है। इस दौरान अमेरिका और सोवियत संघ के द्विध्रुवीय विश्व से लेकर अमेरिकी आधिपत्य के एक संक्षिप्त एकध्रुवीय काल तक और अब चीन एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के द्विध्रुवीय प्रतियोगिता की ओर आगे बढ़ने से लेकर **बहुध्रुवीयता** के एक भ्रम तक विश्व ने कई स्वरुप देखे हैं।आज के इस विशृंखल विश्व में भारत को अपनी विशिष्ट विदेश नीति पहचान को परिभाषित करने और नैतिक मूल्यों के साथ राष्ट्रीय हित को संतुलित करने के लिये अपनी संलग्नता की रूपरेखा को आकार देने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

परिचय

भारत की विदेश नीति को नियंत्रित करने वाले प्रमुख उद्देश्यों का विवरण नीचे दिया गया है:

भारत की क्षेत्रीय अखंडता और विदेश नीति की स्वतंत्रता का संरक्षण:

- क्षेत्रीय अखंडता और विदेशी आक्रमण से राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा एक राष्ट्र का मुख्य हित है।
- भारत को लंबे समय के बाद विदेशी शासन से कड़ी मेहनत से आजादी मिली थी। इस प्रकार, उनके लिए विदेश नीति की स्वतंत्रता पर उचित जोर देना स्वाभाविक था।
- अन्य देशों के आंतरिक मामलों में और अंत में गैर-संयोजक की नीति को अपनाने के सिद्धांतों के समर्थन को मजबूत करने के भारत के प्रयास को इस प्रकाश में देखा जाना चाहिए।
- देश की विकास गति को बनाए रखने के लिए, भारत को विदेशी भागीदारों के साथ बातचीत करने की आवश्यकता है ताकि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, वित्तीय सहायता और मेक इन इंडिया, कौशल भारत, स्मार्ट सिटी, बुनियादी ढांचा विकास, डिजिटल इंडिया, स्वच्छ भारत आदि योजनाओं और कार्यक्रमों के लिए प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण किया जा सके। इसलिए, यह उल्लेखनीय है कि हाल के वर्षों में, भारत की विदेश नीति ने राजनीतिक कूटनीति के साथ आर्थिक कूटनीति को एकीकृत करके एक दृष्टिकोण अपनाया है।[1,2]
- भारत दुनिया में सबसे बड़ा प्रवासी देश है, जिसमें लगभग 20 मिलियन अनिवासी भारतीय और भारतीय मूल के व्यक्ति शामिल हैं, जो पूरी दुनिया में फैले हुए हैं। इसलिए, प्रमुख उद्देश्यों में से एक उन्हें संलग्न करना और विदेशों में उनकी उपस्थिति से अधिकतम लाभ प्राप्त करना है, जबकि साथ ही साथ उनके हितों की यथासंभव रक्षा करना है।

संक्षेप में, भारत की विदेश नीति के चार महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं:

1. भारत को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक खतरों से बचाने के लिए।
2. एक ऐसा बाहरी वातावरण तैयार करना जो भारत के समावेशी विकास के लिए अनुकूल हो ताकि विकास का लाभ देश के सबसे गरीब से गरीब व्यक्ति तक पहुंच सके।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 10, October 2017

3. यह सुनिश्चित करने के लिए कि वैश्विक मंचों पर भारत की राय सुनी जाती है और भारत वैश्विक आयामों के मुद्दों जैसे आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण, वैश्विक शासन के संस्थानों के सुधारों पर विश्व राय को प्रभावित करने में सक्षम है।
4. भारतीय प्रवासियों को जोड़ना और उनकी रक्षा करना।[3,4]

अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देना:

- भारत को एक 'नए स्वतंत्र और विकासशील देश' के रूप में सही ढंग से महसूस हुआ कि अंतर्राष्ट्रीय शांति और विकास एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।
- निरस्त्रीकरण पर उनका जोर और सैन्य गठबंधनों से दूर रहने की नीति का उद्देश्य वैश्विक शांति को बढ़ावा देना है।

भारत का आर्थिक विकास:

- स्वतंत्रता के समय देश का तीव्र विकास भारत की मूलभूत आवश्यकता थी।
- देश में लोकतंत्र और स्वतंत्रता को मजबूत करने के लिए भी इसकी आवश्यकता थी
- दोनों ब्लॉकों से वित्तीय संसाधन और प्रौद्योगिकी हासिल करने और अपनी ऊर्जा को विकास पर केंद्रित करने के लिए, भारत ने सत्ता गुट की राजनीति से दूर रहने का विकल्प चुना, जो शीत युद्ध अंतरराष्ट्रीय राजनीति की एक प्रमुख विशेषता थी।[5,6]

भारत की विदेश नीति का अभ्यास इसके दो अन्य उद्देश्यों को भी प्रकट करता है:

1. उपनिवेशवाद और नस्लीय भेदभाव का उन्मूलन
2. विदेशों में भारतीय मूल के लोगों के हितों की सुरक्षा।

- विदेश मंत्रालय (2010) के एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि भारत की विदेश नीति उसके प्रबुद्ध स्वार्थ की रक्षा करना चाहती है।
- इसका प्राथमिक उद्देश्य एक शांतिपूर्ण और स्थिर बाहरी वातावरण को बढ़ावा देना और बनाए रखना है जिसमें समावेशी आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन के घरेलू कार्यों में तेजी से प्रगति हो सके।
- इस प्रकार, भारत एक शांतिपूर्ण परिधि चाहता है और अपने विस्तारित पड़ोस में अच्छे पड़ोसी संबंधों के लिए काम करता है। भारत की विदेश नीति यह भी मानती है कि जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा जैसे मुद्दे भारत के परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण हैं। चूंकि ये मुद्दे वैश्विक प्रकृति के हैं, इसलिए उन्हें वैश्विक समाधान की आवश्यकता है[7,8]

विचार-विमर्श

'इंडिया फर्स्ट' की नीति: स्वतंत्रता के 75 वर्षों के साथ देश में 'इंडिया फर्स्ट' की विदेश नीति को अभिव्यक्त करने का वृहत आत्म-विश्वास और आशावाद मौजूद है। भारत अपने लिये स्वयं निर्णय लेता है और इसकी स्वतंत्र विदेश नीति किसी भयादोहन या दबाव के अधीन नहीं लाई जा सकती।विश्व की लगभग 1/5 आबादी के साथ भारत को अपना स्वयं का पक्ष चुनने और अपने हितों का ध्यान रखने का अधिकार है।यह निश्चित रूप से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एक मूल तत्त्व है कि राष्ट्रीय हित सर्वोपरि हैं और भारत ने भी अन्य देशों की तरह विदेशी एवं राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों के अनुपालन में अपने हितों पर बल दिया है।**यथार्थवादी कूटनीति:** आज के आत्मविश्वास से परिपूर्ण भारत के पास वैश्विक फलक पर अपनी नई आवाज़ है जिसकी जड़ें घरेलू वास्तविकताओं एवं सभ्यतागत लोकाचार में निहित होने के साथ ही स्वयं के प्रमुख हितों की खोज में गहराई से जमी हैं।जैसा कि भारतीय विदेश मंत्री ने '**रायसीना डायलॉग**' में टिप्पणी की थी कि "विश्व को खुश करने की कोशिश करने के बजाय 'हम कौन हैं' के आधार पर विश्व से संलग्न होना बेहतर है।" भारत अपनी पहचान और प्राथमिकताओं को लेकर पर्याप्त आत्म-विश्वास रखता है, दुनिया भारत के साथ इसकी शर्तों पर संलग्न होगी।**अपने लाभ के लिये शक्ति संतुलन बनाए रखना:** चीन

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 10, October 2017

की **'बेल्ट एंड रोड' पहल** को वर्ष 2014 में ही चुनौती दे देने वाली एकमात्र वैश्विक शक्ति होने से लेकर एक मज़बूत सैन्य कार्रवाई के साथ चीनी सैन्य आक्रमण का जवाब देने वाले देश के रूप में भारत ने दृढ़ता का परिचय दिया है।दूसरी ओर, भारत ने किसी औपचारिक गठबंधन में शामिल हुए बिना ही अमेरिका के साथ एक कार्यकरण संबंध का विकास किया है और घरेलू क्षमताओं के निर्माण के लिये पश्चिमी देशों से संलग्नता बढ़ाई है।भारत संलग्नता में अत्यंत व्यावहारिक रहा है और शक्ति के मौजूदा संतुलन का उपयोग अपने लाभ के लिये करने की इच्छा रखता है।**बढ़ते आर्थिक संबंध:** चूँकि शेष विश्व के साथ भारत की आर्थिक अन्योन्याश्रयता गहरी होती गई है, यह अपने उत्पादों, कच्चे माल के स्रोतों और इसके विस्तारित विदेशी सहायता के संभावित प्राप्तकर्त्ताओं के लिये बाज़ारों के प्रति अधिक चौकस हो गया है।[9,10]

परिणाम

बहु-संरेखित/बहुपक्षीय दृष्टिकोण: चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड/Quad) से लेकर ब्रिक्स (BRICS) तक, भारत कई समूहों की सदस्यता रखता है।प्रायः इसे पुरानी शैली की संलग्नता के रूप में देखा जाता है। हालाँकि भारत अपनी प्राथमिकताओं को अधिक प्रत्यक्ष तरीके से अभिव्यक्त और प्रोत्साहित करने लगा है।**हस्तक्षेप और अनुचित हस्तक्षेप:** भारत अन्य देशों के आंतरिक मामलों में अनुचित हस्तक्षेप (Interference) में विश्वास नहीं करता है।हालाँकि, यदि किसी देश द्वारा किये गए किसी सायास या निष्प्रयास कार्यकरण में भारत के राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करने की क्षमता है तो भारत त्वरित और समयबद्ध हस्तक्षेप (Intervention) करने में संकोच नहीं करता है।भारत की विदेश नीति के नैतिक पहलू--**पंचशील (Five Virtues):** 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षरित 'चीन के तिब्बत क्षेत्र और भारत के के बीच व्यापार समझौते' में पहली बार व्यावहारिक रूप से 'पंचशील' के सिद्धांत को अपनाया गया था, जो बाद में विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिये आचरण के आधार के रूप में विकसित हुआ।[11,12]

ये पाँच सिद्धांत हैं:

- एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिये परस्पर सम्मान
- परस्पर गैर-आक्रामकता
- परस्पर गैर-हस्तक्षेप
- समानता और पारस्परिक लाभ
- शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व

वसुधैव कुटुम्बकम् (The World is One Family): 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भारतीय दर्शन 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की अवधारणा को आधार प्रदान करता है।दूसरे शब्दों में, भारत संपूर्ण विश्व समुदाय को एकल वृहत वैश्विक परिवार के रूप में देखता है, जहाँ इसके सदस्य सद्भाव से रहते हैं, एक साथ कार्य एवं विकास करते हैं और एक दूसरे पर भरोसा करते हैं।**सक्रिय और निष्पक्ष सहायता**: भारत जहाँ भी संभव हो, लोकतंत्र को बढ़ावा देने में संकोच नहीं करता है।यह क्षमता निर्माण और लोकतंत्र की संस्थाओं को सशक्त करने में सक्रिय रूप से सहायता प्रदान करने के रूप में किया जाता है, यद्यपि ऐसा संबंधित सरकार की स्पष्ट सहमति से किया जाता है (उदाहरण के लिये अफगानिस्तान)।**वैश्विक समस्या समाधान दृष्टिकोण:** भारत **विश्व व्यापार व्यवस्था**, **जलवायु परिवर्तन**, आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकार, वैश्विक शासन, स्वास्थ्य संबंधी खतरे जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक बहस एवं वैश्विक सहमति की वकालत करता है।'**वैक्सीन डिप्लोमेसी**' पहल के तहत भारत ने 60 मिलियन खुराक का निर्यात किया, जिनमें से आधे वाणिज्यिक शर्तों पर और 10 मिलियन अनुदान के रूप में प्रदान किये गए।[13]

निष्कर्ष

रूस-यूक्रेन संघर्ष: यह निश्चित रूप से एक जटिल अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक मुद्दा है जहाँ भारत जैसे देशों के लिये राजनीति और नैतिक अनिवार्यता के बीच एक पक्ष चुनना कठिन कार्य है।रूस भारत का व्यापार भागीदार है जिसे यूरेशियाई क्षेत्र में एक बढ़त प्राप्त है। प्रत्यक्ष रूप से रूस के विरुद्ध जाकर भारत इस क्षेत्र में अपने हितों को खतरे में डाल देगा।जैसा कि यथार्थवादी विवेक की

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 10, October 2017

मांग है, भारत रूस-यूक्रेन संघर्ष पर राजनीति के निर्देशों की उपेक्षा करते हुए सीधे एक नैतिक दृष्टिकोण नहीं अपना सकता।**आंतरिक चुनौतियाँ:** कोई देश बाह्य विश्व में शक्तिशाली नहीं हो सकता यदि वह घरेलू स्तर पर दुर्बल है।भारत का 'सॉफ्ट पावर' तब उपयोगी होगा जब इसे 'हार्ड पावर' का समर्थन प्राप्त होगा।भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने बार-बार ज़ोर देते हुए कहा था कि भारत विश्व मंच पर तभी प्रभावी भूमिका निभा सकता है जब वह आंतरिक और बाह्य, दोनों रूप से सशक्त हो।**शरणार्थी संकट:** वर्ष 1951 के शरणार्थी सम्मेलन और इसके 1967 के प्रोटोकॉल का एक पक्षकार नहीं होने के बावजूद भारत विश्व में शरणार्थियों के सबसे बड़े स्थल वाले देशों में से एक रहा है।यहाँ चुनौती मानवाधिकारों और राष्ट्रीय हितों के संरक्षण को संतुलित करने की है। रोहिंग्या संकट के उभार के साथ प्रकट है कि समस्या के दीर्घकालिक समाधान के लिये भारत द्वारा अभी भी बहुत कुछ किया कर सकता है।ये कार्रवाइयाँ मानवाधिकार के मामलों पर भारत की क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिति को निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी।[14]

पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिये सामूहिक दृष्टिकोण: भारत में वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में अग्रणी भूमिका निभाने की क्षमता है, जो वर्ष 2070 तक 'नेट ज़ीरो' तक पहुँचने के लक्ष्य (वर्ष 2016 में आयोजित 26वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में घोषित) में परिलक्षित होती है।पर्यावरणीय समस्याएँ सामाजिक प्रक्रियाओं से जुड़ी हुई हैं। सामाजिक, आर्थिक और साथ ही पारिस्थितिक स्तर पर संवहनीयता प्राप्त करने की आवश्यकता है जैसा कि **सतत् विकास लक्ष्यों** में रेखांकित किया गया है।**आंतरिक और बाह्य विकास को संतुलित करना:** भारत को एक बाह्य वातावरण के निर्माण के लिये प्रयास करना चाहिये जो भारत के समावेशी विकास के अनुकूल हो, ताकि विकास का लाभ देश के निर्धनतम व्यक्ति तक पहुँच सके।यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि वैश्विक मंचों पर भारत की आवाज़ सुनी जाए और भारत आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण, वैश्विक शासन से संबद्ध संस्थानों के सुधार जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर विश्व के विचार को प्रभावित करने में सक्षम हो।**विदेश नीति में नैतिक मूल्यों का प्रवेश कराना:** महात्मा गांधी ने कहा है कि सिद्धांत और नैतिकता से रहित राजनीति विनाशकारी होगी। भारत को नैतिक अनुनय के साथ सामूहिक विकास की ओर बढ़ना चाहिये और विश्व में अपने नैतिक नेतृत्व को पुनः प्राप्त करना चाहिये।**बुनियादी सिद्धांतों को बनाए रखने के साथ-साथ नीति विकास:** हम एक गतिशील दुनिया में रह रहे हैं।[15] इसलिये भारत की विदेश नीति को सक्रिय एवं लचीला होने के साथ ही व्यावहारिक होना होगा ताकि उभरती परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया के लिये इसका त्वरित समायोजन किया जा सके।हालाँकि अपनी विदेश नीति के कार्यान्वयन में भारत हमेशा बुनियादी सिद्धांतों की एक श्रृंखला का पालन करता है, जिस पर कोई समझौता नहीं किया जाता। ये बुनियादी सिद्धांत हैं:

- राष्ट्रीय आस्था और मूल्य
- राष्ट्रीय हित
- राष्ट्रीय रणनीति

वैश्विक एजेंडा को आकार देना: भारत के लिये अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में एक 'अग्रणी शक्ति' के रूप भूमिका निभा सकने की संभावनाओं का पता लगाना महत्त्वपूर्ण है, जो कि वैश्विक मानदंडों और संस्थागत वास्तुकला को आकार दे सके, न कि इन्हें दूसरों द्वारा आकार दिया जाए और भारत बस अनुपालनकर्त्ता हो।संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने की आकांक्षा इसी भूमिका से संबद्ध है, जिसके लिये बड़ी संख्या में देशों ने पहले ही समर्थन देने का वादा कर रखा है।**विकास के लिये कूटनीति:** अपने विकास प्रक्षेपवक्र को बनाए रखने के लिये भारत को पर्याप्त बाह्य आदान/इनपुट की आवश्यकता है।मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्मार्ट सिटीज़, अवसंरचना विकास, डिजिटल इंडिया, क्लीन इंडिया जैसे हमारे कार्यक्रमों की सफलता के लिये विदेशी भागीदारों, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, वित्तीय सहायता और प्रौद्योगिकीय हस्तांतरण की आवश्यकता है।भारत की विदेश नीति को विकास के लिये कूटनीति के इस पहलू पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये जहाँ आर्थिक कूटनीति को राजनीतिक कूटनीति के साथ एकीकृत किया जाए।[16]

संदर्भ

1. "Indian economic growth rate eases" [भारत की आर्थिक विकास दर संतोषपरक] (अंग्रेज़ी में). बीबीसी न्यूज़. ३० नवम्बर २००७. मूल से 25 दिसंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २४ जून २०१४.
2. ↑ "The Non-Aligned Movement: Description and History", nam.gov.za, The Non-Aligned Movement, 21 सितंबर 2001, मूल से 21 अगस्त 2011 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 23 अगस्त 2007
3. ↑ India's negotiation positions at the WTO (PDF), November 2005, मूल (PDF) से 13 सितंबर 2011 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 23 अगस्त 2010

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 10, October 2017

4. ↑ Analysts Say India'S Power Aided Entry Into East Asia Summit. | Goliath Business News, Goliath.ecnext.com, 29 जुलाई 2005, मूल से 9 अगस्त 2011 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 21 नवम्बर 2009
5. ↑ "भारत की 37 देशों के साथ प्रत्यार्पण संधि है". पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 12 फ़रवरी 2014. मूल से 22 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 फ़रवरी 2014.
6. ↑ "ndia has Extradition Treaties in operation with 37 countries". पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 12 फ़रवरी 2014. मूल से 22 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 फ़रवरी 2014.
7. ↑ "From potol dorma to Jaya no-show: The definitive guide to Modi's swearing in" (अंग्रेज़ी में). फर्स्टपोस्ट. २६ मई २०१४. मूल से 28 मई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २६ मई २०१४.
8. ↑ उप्पुलुरी, कृष्ण (२५ मई २०१४). "Narendra Modi's swearing in offers a new lease of life to SAARC" (अंग्रेज़ी में). नई दिल्ली: डीएनए इण्डिया. मूल से 27 मई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २६ मई २०१४.
9. ↑ "ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री की भारत यात्रा". पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 5 सितंबर 2014. मूल से 6 सितंबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 सितंबर 2014.
10. ↑ "ऑस्ट्रेलिया से न्यूक्लियर डील पर बन गई बात". नवभारत टाईम्स. 5 सितंबर 2014. मूल से 6 सितंबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 सितंबर 2014.
11. ↑ "दंगों के लिए मोदी जिम्मेदार नहीं: ऑस्ट्रेलियाई PM". नवभारत टाईम्स. 5 सितंबर 2014. मूल से 6 सितंबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 सितंबर 2014.
12. ↑ भारत जापान का समुद्री सहयोग Archived 2014-09-03 at the Wayback Machine रेडियो दायेच विले (जर्मन रेडियो प्रसारण सेवा)।
13. ↑ आर्चिस मोहन - प्रधान मंत्री श्री शिंजो अबे की यात्रा : भारत - जापान संबंधों की पराकाष्ठा Archived 2016-09-12 at the Wayback Machine विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
14. ↑ भारत-जापान व्यापार 2014 तक 25 अरब डॉलर Archived 2014-09-03 at the Wayback Machine - Indo Asian News Service, Last Updated: दिसम्बर 29, 2011
15. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 4 मई 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 फ़रवरी 2014.
16. ↑ "Amid BRICS' rise and 'Arab Spring', a new global order forms" Archived 2011-10-20 at the Wayback Machine. Christian Science Monitor. 18 अक्टूबर 2011. Retrieved 2011-10-20.